अव्यवस्थाओं पर सवालिया निशान खड़े करती निष्पक्ष,निर्भीक खबरों का दैनिक संकलन

Daily NEWS ALERT

खबरों पर सरकार का पक्ष जानने के लिए लॉगिन करें:-
www.jawabdosarkar.com

जवाब दो!!! सरकार
www.jawabdosarkar.com
देश का पहला जवाबदेही पोर्टल

2020/dna/jpr/02 जयपुर संस्करण E-News-Digest, Issued in Public Interest शनिवार25 अप्रैल 2020

01

अभ्रक के टुकड़े बीनकर कर जुटा रहे रोटी

मिट्टी से पेट भरने की जुगत

लॉकडाउन में गांव दर्शन

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

भीलवाड़ा. ये मासूम बच्ची पत्थरों से खेल नहीं रही बल्कि परिवार के लिए दो जून की रोटी के बंदोबस्त में लगी है। जिले में कई जगह महिलाएं, बच्चे व बुजुर्ग भरी धूप में सड़कों के दोनों तरफ बिछी मिट्टी से अभ्रक के छोट टुकड़े बीनते नजर आ रहे है। इन टुकड़ों को बेचकर रोटी का जुगाड़ कर रहे हैं। दरअसल लॉकडाउन ने गांवों में रोजी-रोटी का संकट बढ़ा दिया है। ऐसे हालात में मुख्य चिंता खुद व परिवार के पेट पालने की है। लोगों ने अब सड़क किनारे बिछी मिट्टी से काम की सामग्री निकालकर पेट भरने का जुगाड़ किया है।

जिले में अभ्रक बहुतायत में हैं। जिले में नई सड़कें बनती है और उसके दोनों तरफ डाली जाने वाली मिट्टी में अभ्रक के टुकड़े रहते हैं। खेतों में भी गड्ढों से अभ्रक निकाली जा सकती है। लॉकडाउन में काम धंधे बंद है। ऐसे में मांडल क्षेत्र के पीथास, मालीखेड़ा, भीलखेड़ी, कालूखेड़ा, मेजा, घोड़ास, कोटड़ी, बोरियापुरा, गणेशपुरा, बागोर, लेसवा आदि गांवों के कई लोग इन दिनों सड़कों पर बैठे मिल जाएंगे। ये सुबह होते ही परिवार समेत घर से निकल जाते है। सड़कों पर बिछी मिट्टी से अभ्रक बीनते हैं। एक व्यक्ति दिन में पांच से दस किलो अभ्रक एकत्र कर लेता है। इसे सात से दस रुपए किलो में बेच देते हैं। इससे 100 से 200 रुपए तक की कमाई कर लेते हैं। मालीखेड़ा के राम् का कहना है कि घर बैठे खर्चा कैसे निकाले, इसलिए रोड साइड में मिट्टी से अभ्रक बीनकर जिंदगी आगे बढ़ा रहे हैं।

गांवों में जाते हैं व्यापारी

जिन गांवों में अभ्रक खदानें हैं। वहां शहरों से जाकर व्यापारी अभ्रक खरीदते हैं। कई लोग अपने खेतों में छोटा-मोटा गड्ढा कर अभ्रक बीनते हैं। हालांकि इससे ज्यादा कमाई नहीं होती है लेकिन पेट भरने का जुगाड़ हो जाता है। बागोर, आमली, बोरियापुरा, अड़सीपुरा, महेंद्रगढ़ क्षेत्र में अभ्रक की कई खदानें हैं।

भीलवाड़ा के मालीखेड़ा गांव में सड़क किनारे अभ्रक बीनती महिला।

विदेशों में जाती है हमारी अभ्रक

मांडल, करेड़ा, सहाड़ा क्षेत्र में खदानें हैं। पहले भीलवाड़ा की पहचान अभ्रक नगरी के नाम से थी। यह अभ्रक क्रॉकरी आदि बनाने के काम आती है। जानकारों का कहना है कि अब यह मिनरल कम हो गया है लेकिन मांग बहुत है। यह अभ्रक विदेशों में भी जाती है।

सड़क किनारे अभ्रक बीनती बच्ची।

पूरा गांव लग जाता है इस काम में

इन दिनों खेतों में फसल नहीं है। बाहरी प्रदेशों में आइस्क्रीम का धंधा बंद हो गया। ऐसे में पूरे परिवार खेतों के आसपास अभ्रक बीन रहे हैं। अभ्रक व्यापारी घनश्याम देवपुरा का कहना है कि इन दिनों छोटे टुकड़े वाली अभ्रक खूब आ रही है। अभ्रक को भॉडल भी कहते हैं। देवपुरा ने बताया कि अभ्रक बाहर नहीं जा रही लेकिन व्यापारी स्टॉक कर रहे हैं।

संबन्धित समाचार पत्र एवं संस्करण:-राजस्थान पत्रिका,भीलवाडा	प्रकाशन दिनांक:-25/04/2020
जिम्मेदार विभाग:-जिला प्रशासन-भीलवाडा	संबन्धित मामला:-बेरोजगारी,भुखमरी,बाल श्रम

02

रुपए नहीं देने पर घायल महिला को रास्ते में छोड़ गया एंबुलेंस चालक

भीलवाड़ा | महात्मा गांधी अस्पताल में इलाज करवाने वाली घायल महिला को 300 रुपए नहीं देने पर एंबुलेंस ड्राइवर रास्ते में ही छोड़कर चला गया। उसे दूसरी एंबुलेंस से भेजा गया। जानकारी के अनुसार हमीरगढ़ थाना क्षेत्र के स्वरूपगंज में महिला गिर गई। उसके सिर में चोट आई। उसे महात्मा गांधी अस्पताल में लाया गया। यहां इलाज के बाद निजी एंबुलेंस में किराए की बात कर स्वरूपगंज रवाना हुई। एंबुलेंस चालक ने रास्ते में किराए के 300 रुपए मांगे। महिला ने घर जाने पर देने की बात कही तो एंबुलेंस चालक उसे व परिजनों को पुर रोड पर ले गया और प्रतापनगर थाने के पास उतारकर चला गया। इधर नाकाबंदी पाइंट पर ड्यूटी दे रहे आरएसी के जवानों ने उसकी पीड़ा जानी। इसके बाद 108 एंबुलेंस बुलवाई, लेकिन पायलट ने घायल को घर छोड़ने का नियम नहीं होने की दुहाई देते हुए उसे फिर से महात्मा गांधी अस्पताल पहुंचा दिया। वहां से दूसरी एंबुलेंस से स्वरूपगंज भिजवाया गया।

संबन्धित समाचार पत्र एवं संस्करण:-दैनिक भास्कर,भीलवाडा

प्रकाशन दिनांक:-25/04/2020

जिम्मेदार विभाग:-स्वास्थ्य विभाग-भीलवाडा

संबन्धित मामला:-भ्रष्टाचार,मानवाधिकार हनन,सेवा मे कमी

03

एसएमएस अस्पताल में विरोध

कर्मचारियों को नहीं मिल रहे एन-95 मास्क और पीपीई किट

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जयपुर. सवाई मानसिंह अस्पताल में कोरोना वॉरियर्स मरीजों से सीधे सम्पर्क में आने पर लगातार कोरोना की चपेट में आ रहे हैं। ऐसे में अब अस्पताल के विभिन्न चिकित्सा संघों ने विरोध करना शुरू कर दिया है। संघों के पदाधिकारियों का कहना है कि अस्पताल के चिकित्सकों को कोरोना संक्रमण से बचाने के लिए प्रशासन पीपीई किट व एन-95 मास्क उपलब्ध नहीं करवा रहा है, जबकि अस्पताल में कम्प्यूटर ऑपरेटर, फार्मासिस्ट, लैब टेक्निशियन, सफाईकर्मी, वॉर्ड बॉय ऐसे कई कर्मचारी हैं, जो चिकित्सकों के साथ कोरोना में ड्यूटी कर रहे हैं।

संबन्धित समाचार पत्र एवं संस्करण:-राज. पत्रिका,भीलवाडा

प्रकाशन दिनांक:-25/04/2020

जिम्मेदार विभाग:-एसएमएस हॉस्पिटल

संबन्धित मामला:-स्वास्थ्य सुविधाओं मे कमी